परिशिष्ट 7

(यीशु के दृष्टान्त)
दुष्टात्मा के वापस आने और दो देनदार का दृष्टांत

मत्ती 12:43-45 में दृष्टात्मा के वापस आने का दृष्टांत
और लूका 7:40-50 में दो देनदारों का दृष्टांत
परमेश्वर के राज्य में व्यय प्रेम के बारे में हैं।

क. एक दुष्टात्मा का वापस आना

पढ़ें मत्ती 12:43-45।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?
ध्यान दें। कुछ लोगों के अनुभव में, इस कहानी के तत्व जीवन के प्रति सच्चे नहीं हैं। क्योंकि वे शैतान या दृष्टात्माओं के अस्तित्व पर विश्वास नहीं करते और इसलिए वे शैतान और उसकी दृष्टात्माओं के काम को नहीं पहचान पाते। वे अभी तक भी यह नहीं समझ पाए हैं कि उनके जीवन में कोई विशेष घटना (सभी नहीं) दुष्टात्माओं के कारण हुई। फिर भी यीशु के समय में और आज भी कुछ समाजों में लोग आम तौर पर दृष्टात्माओं पर विश्वास करते हैं और उनके विश्नकारी कार्यों के देखते हैं। उन्होंने देखा है कि कैसे यीशु लोगों में से दुष्टात्माओं को बाहर निकालते थे या आज भी दुष्टात्माओं को कैसे बाहर निकाला जाता है! उनके लिए इस दृष्टांत की कहानी विचित्र, अंधविश्वासी या सांस्कृतिक रूप से निर्धारित नहीं है।

---

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 12:22-42 में निहित है।
इसमें निम्नलिखित शामिल हैं:

शैतान के विनाश का चिन्ह। मत्ती 12:22-37 इस प्रश्न के साथ व्यवहार करता है कि क्या यीशु के चिन्ह् और चमत्कार शैतान के अधिकार (प्रभुत्व, सामर्थ्य, नियत्रंण) का प्रमाण है या फिर उसकी हार (विनाश) का? समायोजन यीशु और उनकी सेवकाई के खिलाफ फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों का बढ़ता हुआ विरोध है। उन्होंने उन चीजों को करने के लिए यीशु की निंदा की जो सब्त के दिन करना व्यवस्था के अनुसार उचित नहीं था और उन्होंने यीशु को मार डालने का षड़यंत्र किया (मत्ती 12:2,7,10,14)। उन्होंने देखा था कि कैसे यीशु ने दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति को चंगा था, जो कि अंधा और गूंगा था (मत्ती 12:22-23)। अब फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों ने यह कह कर खुलेआम

यीशु की निंदा की कि यह शैतान (बालजबूल या बालजबूब) की सामर्थ्य के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता है।

हालाँकि, यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि जब वह परमेश्वर के आत्मा के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालते हैं तो परमेश्वर का राज्य उनके पास आ चुका है। यीशु ने सिखाया की उनके चमत्कार और दुष्टात्माओं को निकालना शैतान की हार (विनाश) के चिन्ह् हैं (शैतान और उसकी दुष्टात्माओं के प्रभुत्व के चिन्ह् नहीं)! वे पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य (प्रभुत्व, सामर्थी शासन) की उपस्थिति के चिन्ह् और प्रमाण हैं! यीशु ने सिखाया की शैतान को बांधना और उसकी दुष्टात्माओं को निकालना, इस बात का प्रमाण है कि उनके प्रथम आगमन पर परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर आ चुका है!

योना का चिन्ह्। मत्ती 12:38-42, में यीशु ने धार्मिक यहूदी अगुवों को चमत्कारिक चिन्ह् देखने की उनकी लालसा के लिए फटकारा। इस तथ्य के बावजूद की यीशु ने उनके बीच में चंगाई के बहुत से चमत्कार किए, इन फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों ने इन चिन्हों को *शैतान की सामर्थ्य से किए गए पृथ्वी पर के चिन्ह्* समझ कर नकार दिया। वे *परमेश्वर की सामर्थ्य से स्वर्गीय चिन्ह्* देखने की मांग कर रहे थे, जैसा कि एलिय्याह ने स्वर्ग से आग प्रगट थी, ताकि यीशु भी सिद्ध कर सके कि वह वास्तव में मसीहा थे (मत्ती 16:1)। इस्त्राएल के इन धार्मिक अगुवों और उनके अनुयायियों की दिलचस्पी लोगों की चंगाई और उद्धार में नहीं थी, लेकिन केवल सनसनीखेस घटनाओं और रोमांचकारी प्रदर्शन में थी।

एक मात्र चिन्ह् जो यीशु ने उन्हें दिया वह योना का चिन्ह् था। योना का यह चिन्ह् यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान का एक प्रकार (उदाहरण के रूप में एक घटना) था। यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान, ऐसी पीढ़ी के लिए एक मात्र चिन्ह् है जो सनसनीखेस चिन्ह् के लिए तरसती है!

नकारात्मकता के धर्म का चिन्ह्। जिस तरह के धर्म की वकालत फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक करते थे वह स्पष्ट रूप से ''एक नकारात्मकताओं का धर्म'' था। उन्होंने पुराने नियम के सकारात्मक नहीं पर नकारात्मक पहलुओं पर जोर दिया। उन्होंने लोगों को सिखाया,

- ''चुंगी लेने वालों और पापियों से *न* मिलें'',
- ''बीमारों को चंगा करने और गेहूं की बालों को तोड़ने के द्वारा सब्त के दिन को *न* तोड़े'',
- ''उस शपत को *न* तोड़े जो आपने परमेश्वर की खाई हो'', इत्यादि।

बहुत से ऐसे ''ऐसा मत करो'' के बारे में सोचें या जिसकी मांग धार्मिक अगुवें हमारे दिनों में करते हैं।

आधुनिक लोगों की नकारात्मक व्यवस्थाः *न करें:*

- कुछ विशेष खाद्य पदार्थ खाना (उदाहरण के लिएः सूअर का मांस)
- शराब पीना
- धुम्रपान
- नृत्य

धर्मों में नकारात्म व्यवस्थाः *न करें:*

- धार्मिक सभाओं के दौरान गीत गाना

- यह कहना कि परमेश्वर ने स्वयं को एक मनुष्य में प्रकट किया (उदाहरण के लिएः यीशु समीह) (यहाँ तक कि जब उसने स्वयं को जलती हुई झाड़ी में प्रगट किया) (निर्गमन 3:1-6)
- इस दावे पर प्रश्न उठाना कि एक विशेष पुस्तक स्वर्ग से उतरी थी
- इस विश्वास पर सवाल उठाना कि एक मनुष्य भविष्यद्वक्ता होने का दावा करता है या सत्य बोलता है
- अपने स्वयं के धर्म को छोड़ दूसरे धर्म के लोगों से मिलना, इत्यादि।

<u>मनुष्यों की नकारात्म व्यवस्थाः</u> *न करें:*

- अपनी दाढ़ी बनाना
- बिना सिर पर कुछ ढ़के बाहर जाना

<u>महिलाओं के लिए नकारात्मक व्यवस्थाः</u> *न करें:*

- बिना टोपी या अपने सिर पर कुछ ढ़के आराधना करना
- बिना घूंघट के सार्वजनिक रूप से दिखाई देना
- सार्वजनिक रूप से पहचानने योग्य दिखाई देना
- परमेश्वर के बारे में पुरूषों से बात करना
- पुरूषों से बात करना

यहूदी धर्म गुरूओं के पास 365 प्रतिबंधों की सूची थी (248 आज्ञाओं की सूची के अलावा) जो अनके सभी अनुयायियों के लिए पालन करना आवश्यक था! इसलिए उनके धर्म में 365 ''*न करें*'' हैं!

यहूदियों के इस नकारात्मक धर्म के संदर्भ में यीशु ने ''एक दुष्टात्मा के वापस आने'' का दृष्टांत कहा था।

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 12:43-45 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण मत्ती 12:45 और लूका 7:33-35 में निहित है। यीशु ने कहा, ''इस दुष्ट पीढ़ी के साथ यही होगा!'' जो कुछ उन्होंने साफ लेकिन खाली घर के बारे में कहा वह इस पीढ़ी पर लागू होता है, अर्थात इस्त्राएल राष्ट्र पर (और आज मानव निर्मित धर्मों के लिए), जिन्होने यीशु को नहीं पहचाना और विश्वास नहीं किया की वह मसीहा थे।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

मनुष्य। यीशु इस दृष्टांत में किसी भी विवरण के लिए कोई विशिष्ट अर्थ प्रदान नहीं करते। वह इस पीढ़ी (धार्मिक लोगों की पीढ़ी) की तुलना उस व्यक्ति से करते हैं जो शुरूआत में ग्रस्त था, और फिर स्वत्रंत किया गया और अंत में फिर से आठ दुष्टात्माओं से ग्रस्त हो गया (मत्ती 12:45)। सम्पूर्ण दृष्टांत की व्यख्या इस कथन के प्रकाश में कि जानी चाहिए।

दुष्टात्मा। यीशु का इरादा दुष्टात्माओं पर कोई पाठ्यक्रम सिखाने का नहीं था। वह चाहते हैं कि हम दुष्टात्माओं के बारे में इतना अधिक न सोचें जितना कि ''इस दुष्ट पीढ़ी'' के (मत्ती 12:39,45) जो

कि आठ दुष्टात्माओं से ग्रस्त व्यक्ति के समान दिखाई देता है। इस प्रकार, ''दुष्टात्माएँ किसी और चीज का प्रतिनिधित्व नहीं करती और इस दृष्टांत में एक प्रासंगिक विवरण नहीं है।

सूखी जगह। जिस प्रकार अच्छे स्वर्गदूत क्रम, सुंदरता और जीवन की परिपूर्णता से जुड़े हैं उसी प्रकार बुरे स्वर्गदूत विकार, निर्जनता और मृत्यु से जुड़े हैं। इन जलरहित या रेगिस्तानों को कोई प्रासंगिक अर्थ नहीं है, लेकिन यह केवल कहानी को बढ़ाता है।

एक दुष्टात्मा से ग्रस्त होना फिर स्वतंत्र होना और अंत में आठ दुष्टात्मओं से ग्रस्त होना। यह एक प्रासंगिक और आवश्यक विवरण है, क्योंकि यह इस दुष्ट पीढ़ी की दशा का वर्णन करता है! इस दृष्टांत के अर्थ का अनुमान केवल इसके संदर्भ से लगाया जा सकता है।

इस्त्राएल में यूहन्ना बपतिस्मादाता और यीशु की प्रारंभिक सेवकाई एक व्यक्ति को दुष्टात्मा से स्वतंत्र करने के समान थी। यूहन्ना ने पश्चयाताप की आवश्यकता और पश्चयाताप को बनाए रखते हुए फल लाने का प्रचार किया (मत्ती 3:5)। यीशु ने भी लोगों को पश्चयाताप करने के लिए कहा, क्योंकि उन्होंने कहा कि मन फिराव क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है (मत्ती 4:17)। इन दोनों के बहुत से अनुयायी हो गए थे (मत्ती 4:23-25)। यीशु मसीह और यूहन्ना बपतिस्मादाता की सेवकाई के माध्यम से इस्त्राएल में जो कुछ हो रहा था वह ऐसा प्रतीत हो रहा था कि एक व्यक्ति में से दुष्टात्मा बाहर निकाल दी गई है- वह ''व्यक्ति'' यीशु मसीह के दिनों में इस्त्राएल राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है।

लेकिन फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों के प्रभाव में, इस्त्राएल की दशा लगातार बदल रही थी। फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों के ज्याद से ज्यादा अनुयायियों ने यीशु का विरोध किया। धार्मिक अगुवों ने खुले तौर पर यीशु की निदां की, दोष लगाया और भला बुरा कहा (मत्ती 12:2,7,10,14,24)। यहाँ तक कि उन्होंने यीशु को मार डालने की साजिश की। अंत में वे और उनके अनुयायी चिल्ला उठे ''उसे क्रूस पर चढ़ाओ! क्रूस पर!'' (मत्ती 26:59; 27:1,20,41)। इस्त्राएल में अब जो कुछ हो रहा था वह ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों एक व्यक्ति के अंदर एक दुष्टात्मा की जगह आठ दुष्टात्माओं ने ले ली हो। वह ''व्यक्ति'' अभी भी इस्त्राएल राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है जिसे यीशु ''यह दुष्ट पीढ़ी'' कहते हैं! यीशु मसीह का विरोध और तिरस्कार करने से, इस्त्राएल की दशा और भी बुरी हो गई थी!

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का केंद्रीय बिंदु या मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 12:43-45 में एक बुरी आत्मा की वापसी का दृष्टांत ''परमेश्वर के राज्य में व्यय प्रेम'' के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''परमेश्वर के राज्य को नकारात्मक धर्म की अपेक्षा सकारात्मक धर्म के रूप में चित्रित किया गया है। इसे नकारात्मक धर्म (नकारात्मक व्यवस्था और कानूनों की सूची के साथ) में बढ़ने के बजाय सकारात्मक व्यय (दृश्यमान) प्रेम के रूप में चित्रित किया गया है''। इसे यहूदी धर्म में वैधानिक निष्क्रियता (मत्ती 12:2), दोष के वातावरण (मत्ती

12:7), नकारात्मक निंदा (मत्ती 12:24) और बाहरी चिन्हों के प्रति हठ (मत्ती 12:39) की अपेक्षा उन लोगों के प्रति यीशु मसीह के व्यय प्रेम (दृश्यमान) के रूप में चित्रित किया गया है जिन्हें चंगाई, स्वतंत्रता और उद्धार की आवश्यकता है (मत्ती 12:9-14)।

व्यय (दृश्यमान) प्रेम परमेश्वर के राज्य की उत्कृष्ट विशेषताओं में से एक है! व्यय (दृश्यमान) प्रेम लगातार गलत या बुरा करने के भय के बजाय नियममित रूप से सही और भला करने के लिए लगन होना है! परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग खाली और सूने घर की अपेक्षा भरे हुए घर के समान हैं जिसमें सकारात्कम गतिविधियाँ होती हैं (मत्ती 12:44)। घर के निवासी परमेश्वर के अनुग्रह से विश्वास के द्वारा चंगे, स्वतंत्र और उद्धार पाए हुए हैं और अपने आभार को निष्क्रिय शून्यता की अपेक्षा सक्रिय प्रेम, धार्मिकता और पवित्रता के द्वारा प्रकट करते हैं।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

पढ़ें मत्ती 15:13; 21:19; 25:18,26-28; 25:41-46

खोजें और चर्चा करें। ये लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?

ध्यान दें। यीशु केवल एक साफ सुथरे लेकि खाली घर से संतुष्ट नहीं हैं जो एक नकारात्मक, निष्क्रिय और हानिरहित घर्म का प्रतिनिधित्व करता है (एक ऐसा धर्म जो कि व्यवस्था या कानूनों की लंबी सूची के अनुसार सही ठहराया गया है)।

न ही परमेश्वर एक ऐसे व्यक्ति से संतुष्ट है जो कि केवल मनुष्य मात्र के हाथों द्वारा रोपित और विकसित (सिखाया या तैयार किया गया) है (मत्ती 15:13)। यीशु के कार्य दर्शाते हैं कि एक अंजीर का पेड़ जो केवल बहुत सी पत्तियाँ लाता है और फल नहीं लाता, वह श्रापित होने के खतरे में है (मत्ती 21:19)। और यीशु सिखाते हैं कि एक व्यक्ति, जो परमेश्वर द्वारा प्रदान की गई अपनी प्रतिभाओं और जिम्मेदारियों को छिपाता है वह अस्वीकार किए जाने के खतरे में है (मत्ती 25:18,26-28)। एक व्यक्ति जो सोचता है कि वह मसीही है, और अन्य जरूरतमदं मसीहियों की परवाह नहीं करता, वह परमेश्वर के राज्य में मिरास न मिलने के खतरे में है (25:41-46)।

ये सभी लेखांश सिखाते हैं कि यीशु मानव निर्मित नियम या "न करें" जैसे कानूनों द्वारा नियत्रिंत निष्क्रिय धर्म की निंदा करते हैं। इसके बजाए वे प्रेम की सक्रिय सेवा के लिए लोगों को आज्ञा देते और आग्रह करते हैं। फरीसियों जैसे लोग, "यह मत करो और वह मत करों!" पर जोर देते हैं। लेकिन यीशु, "यह करो और वह करो! (और तुम जीवित रहोगे)" पर जोर देते हैं। नकारात्मक धर्म पारंपरिक नियम और कानूनों का उल्लंघन करने का भय दिखाकर इसे लोगों पर थोपते हैं। लेकिन यीशु मसीह लोगों को परमेश्वर से प्रेम करने, अपने पड़ोसी से प्रेम करने और स्वयं से प्रेम करतने के लिए स्वतंत्र करते हैं।

---

6. दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की मुख्य शिक्षाएँ या संदेश क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* और *विश्वास* करना सिखाया और उन्होंने हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें।

(1) व्यय (दृश्यमान) प्रेम या लगातार गलत या बुरा करने के भय के बजाय नियममित रूप से सही और भला करने के लिए लगन।

यह परमेश्वर के राज्य की उत्कृष्ट विशेषताओं में से एक है! यूहन्ना बपतिस्मादाता की सेवकाई के दिनों में इस्त्राएल की दशा एक ऐसे व्यक्ति के समान थी जो कि दृष्टात्मा से स्वतंत्र किया गया हो। लोगों ने पश्चयाताप किया और मसीहा की अपेक्षा कर रहे थे, लेकिन वास्तव में मसीहा को स्वीकार नहीं किया। इस्त्राएल की आत्मा जैसे खाली सूनी, साफ की गई और क्रम में थी। लेकिन इस प्रकार की दशा मानव हृदय की गहरी जरूरतों को और साथ ही परमेश्वर की आवश्यकताओं को न तो पूरा कर सकती हैं और न कभी कर पाएगी।

(2) हानिरहितता पवित्रता के समाना नहीं है!
वैधानिक निष्क्रियता व्यय (दृश्यमान) प्रेम के समान नहीं है!

लोग अक्सर नई शुरूआत करने की कोशिश करते हैं, जीवन को बेहतर बनाने या अपने जीवन से गड़बड़ी को दूर करने की कोशिश करते हैं। लेकिन यीशु मसीह एक साफ और खाली घर से कहीं अधिक प्रदान करते हैं! अक्सर लोग स्वयं अपने व्यक्तित्व और चरित्र का निर्माण करते हैं, अध्ययन गोष्ठी में भाग लेते हैं, अपने व्यक्तित्व और और गुणों को विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम या प्रशिक्षण सम्मेलनों में भाग लेते हैं और एक बेहतर मनुष्य बनने के लिए हर प्रकार के भले काम करते हैं।

लेकिन यीशु सिखाते हैं कि वास्तव में आंतरिक रूप से बदलने के लिए और व्यवहार में बाहरी रूप से बदलने के लिए, एक व्यक्ति को ऐसा पौधा होना चाहिए जो कि परमेश्वर द्वारा लगया गया हो (मत्ती 15:13), परमेश्वर द्वारा पुनर्जीवित और रूपांतरित हो (यूहन्ना 3:7)!

लोग अक्सर बाहरी शिष्टाचार, अच्छे व्यवहार, धार्मिक समारोहों और अनिवार्य धार्मिक व्यवहार से प्रभावित होते हैं। यीशु इसकी तुलना एक खाली और साफ–सुथरे घर से करते हैं! लेकिन यीशु मसीह सिखाते हैं कि सच्चे मसीहियों के पास केवल साफ हृदय और जीवन मात्र ही नहीं होना चाहिए। उनके पास शुद्ध किये गए हृदय (यीशु के लहू के द्वारा) और भरे हुए हृदय (पवित्र आत्मा के द्वारा) होने चाहिए!

(3) इसके अतिरिक्त कुछ अन्य दृष्टांत भी आंतरिक वास्तविकता की अपेक्षा बाहरी दिखावे के खतरे के बारे में सिखाते हैं।

ऐसे लोग जो कि उस पेड़ के समान दिखाई देते हैं जिसमे बहुत सी पत्तियां हैं लेकिन फल नहीं और ऐसे लोग जिनके पास तोड़े हैं लेकिन उन्होंने उसे जमीन में गाड़ दिया है, उनकी तुलना साफ–सुथरे, और खाली घर से की गई है। उनका बाहरी व्यवहार एक बदलाव का संकेत देता है, लेकिन यीशु ऐसे हृदय को खोजते हैं जो पवित्र आत्मा और उमड़ते हुए प्रेम से परिपूर्ण हो (रोमियों 5:5)।

(4) परमेश्वर के राज्य को यहूदी धार्मिक अगुवों और शिक्षकों के नकारात्म धर्म की अपेक्षा यीशु मसीह के सकारात्मक धर्म के द्वारा चित्रित किया गया है।

जबकि फरीसियों ने सिखाया की, ‘‘ऐसा मत करो!’’, यीशु ने सिखाया, ‘‘ऐसा करो!’’ उन्होंने सिखाया ‘‘परमेश्वर से प्रेम करो!’’ और अपने पड़ोसी से प्रेम करो!’’ यीशु का गर्म प्रकार का रवैया

फरीसियों के ठंडे वैधानिक रवैये से टकरा रहा था। उनकी व्यापक सोच संकरे वंश की आत्मा से टकरा गई। उनका उमड़ता हुआ प्रेम फरीसियों के स्वार्थीपन से टकरा गया। उनका व्यवस्था के गहरे अर्थ पर जोर देना फरीसियों के व्यवस्था के पत्र को बनाए रखने के जोर देने से टकरा गया (मत्ती 5:17-48)। बड़े हृदय वाले यीशु मसीह और हठधर्मी फरीसी एक साथ नहीं रह पाए! इसलिए यीशु ने कहा, "मैं तुम से कहता हूँ, कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे (मत्ती 5:20)।"

ख. दो देनदार

पढ़ें लूका 7:40:50

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें। एक महाजन को पैसा देने वाले दो देनदारों की कहानी एक वास्तविकता है जिसे हर कोई जानता है। पाँच सौ दीनार उस धनराशि के बजाबर थी जो कि एक साधारण मजदूर लगभग दो साल की समय अवधि के दौरान कमाता था और पचास दीनार उस धनराशि के बाराबर थी जो कि एक साधारण मजदूर लगभग दो महीने में कमाता था। उनमें से कोई भी चुकाने के योग्य नहीं था। उन्हें जेल में ड़लवाने के बजाय, जब तक कि वे सारा कर्ज न चुका दें, महाजन ने उदारतापूर्वक उनका कर्ज रद्द कर दिया।

यीशु ने एक प्रश्न के साथ इस दृष्टांत का निष्कर्ष निकाला, ताकि उनके श्रोताओं को मुख्य संदेश के बारे में सोचने के लिए मजबूर किया जा सके। उन्होंने पूछा, "उनमे से कौन महाजन से अधिक प्रेम रखेगा?" शमौन ने सही उत्तर दिया, "मेरी समझ में वह जिसका उसने अधिक कर्ज रद्द कर दिया।"

तब यीशु ने लागूकरण दिया और उस महिला कि तुलना जिसने उनके पैरों का अभिषेक किया था, उस फरीसी से की जिसने यीशु को भोजन पर आमंत्रित किया था, "इसलिए, मैं तुझ से कहता हूँ इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए- क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया। परन्तु जिसका थोड़ा क्षमा होता है वह थोड़ा प्रेम करता है।"

---

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन लूका 7:36-39 में निहित है।

फरीसी। यीशु को एक फरीसी ने अपने साथ खाने पर अमंत्रित किया था। यह स्पष्ट नहीं है कि उसने क्यों यीशु को आमंत्रित किया। यह संभव है कि उसने यीशु के विषय में सुना हो कि वह एक महान भविष्यद्वक्ता थे और जिज्ञासा के कारण उसने यीशु को आमंत्रित किया हो (लूका 7:16)। यह भी संभव है कि वह यीशु पर दोष लगाने का अवसर ढूढ़ना चाहता था (लूका 6:7)। जो ध्यान उस ने यीशु पर दिया उससे यह स्पष्ट है कि उसने यीशु को प्रेम के कारण या इस कारण अमंत्रित नहीं किया था कि वह यीशु का बड़ा आदर करता था (लूका 7:44-46)। फिर भी यीशु ने उसका आमंत्रण

स्वीकार किया। यीशु ने केवल चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ ही नहीं खाया (लूका 5:29-30), उन्होंने फरीसियों के साथ भी खाया (लूका 7:36; 11:37; 14:1)।

महिला। इस्त्राएल में बिन बुलाए व्यक्ति के लिए ऐसे घर में प्रवेश करना विचित्र नहीं था जिस में भोज दिया गया हो। वे आम तौर पर स्वयं दीवार के साथ बैठ जाते और जो कुछ भी हो रहा होता उसे देखते और यहाँ तक कि कुछ आमंत्रित लोगें के साथ बातचीत करने में लगे रहते थे।

एक सार्वजनिक रूप से बुरी ख्याति प्राप्त महिला भी उस घर में आई जहाँ वे खा रहे थे, और यीशु के पाँवों के पास खड़ी हो गई। यह कहना अनुचित होगा कि वह महिला एक वेश्या थी, क्योंकि एक औरत वेश्या होने के बिना भी पापी हो सकती है। इसके अलावा उपलब्ध विवरण से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि वह अपना पहला जीवन नहीं जी रही थी। इस दिन से पहले, उसने यीशु को सुसमाचार प्रचार करते हुए अवश्य सुना था और सुसमाचार पर विश्वास किया था, क्योंकि उसके सम्पूर्ण व्यवहार ने यीशु की ओर उसके आभार की गवाही दी। उसके हृदय में परमेश्वर द्वारा क्षमा किए जाने की भावना बढ़ रही थी! इसलिए वह उनके प्रति धन्यवाद की एक बहुमूल्य भेंट लाई जो कि उसके जीवन को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे।

महिला का कृतज्ञता का कार्य। अपने पिछले पापमय जीवन के लिए वास्तविक दुःख से अभिभूत होकर, वह फूट-फूट कर रो पड़ी और उसके आंसू यीशु के पाँवों पर बह निकले। उसने अपने बालों से यीशु के पाँवों को सुखाया, उन्हें चूमा और उन पर इत्र डाला। शमौन फरीसी ने, इस बात को अपमान जनक माना और अपने हृदय में यह निष्कर्ष निकाला कि यीशु भविष्यद्वक्ता नहीं हो सकता, क्योंकि यदि वह होता तो जानता कि वह महिला बुरी ख्याति प्राप्त महिला है और उसे स्वयं को छूने की अनुमति नहीं दी होती। फरीसी के दृष्टिकोण और विचारों की प्रतिक्रिया में यीशु ने यह दृष्टांत कहा।

(2) इस दृष्टांत की कहानी लूका 7:41-42 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण लूका 7:43-50 में निहित है।

घर में सभी की उपस्थिति में यीशु अपने मेजबान फरीसी द्वारा प्राप्त अनुचित व्यवहार पर उलाहना देते हैं। उनके मेजबान ने यीशु को मेजबानी के पारंपरिक पूरबी प्रचलन के अनुसार स्वीकार नहीं किया। धूल भरी सड़क से चलकर आने के बाद भी उसने यीशु को अपने पैरों को धोने के लिए पानी प्रदान नहीं किया था (उत्पत्ति 18:4; न्यायियों 19:21)। उसने एक चूम्बन के माध्यम से, जो कि स्नेह की एक अभिव्यक्ति था, यीशु का स्वागत नहीं किया (उत्पत्ति 29:13; 45:15; रोमियों 16:16; 1पतरस 5:14)। उसने सस्ते जैतून के तेल से भी अपने अतिथियों के सिर को अभिषिक्त नहीं किया, जो कि आनंद का प्रतीक था (भजन 23:5; 45:7; 141:5)। संक्षेप में यीशु के साथ फरीसी का व्यवहार ठंडा, कृपारहित और अभद्र था।

यीशु यह भी कहते हैं कि उन्हें महिला से बिल्कुल विपरीत व्यवहार प्राप्त हुआ। यीशु के पैर धोने के लिए उसने पानी के बजाय अपने आँसुओं का इस्तेमाल किया। यह उसके पश्चयाताप और बदलाव का चिन्ह् था। उनके गाल पर चुम्बन करने के बजाय, उसने उनके पैरों को चूमा। उसका चुम्बन उसकी कृतज्ञता का चिन्ह् था। उनके सर पर सस्ते जैतून के तेल के बजाय, उसने उनके पैरों पर बहुमूल्य और सुगंधित इत्र डाला!

तब यीशु ने कहा, ''इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया। पर जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।'' यीशु द्वारा दिए गए इस लागूकरण का निम्नलिखित अर्थ हैः फरीसी ने सुसमाचार पर विश्वास नहीं किया। उसने विश्वास नहीं किया कि वह एक पापी था; इसलिए उसे क्षमा की कोई आवश्यकता महसूस नहीं हुई; और इसलिए उसने कोई आभार व्यक्त नहीं किया! उसने यीशु के प्रति अपने प्रेम की कमी के द्वारा अपने विश्वास की कमी को दर्शा दिया। इसके विपरीत, महिला ने सुसमाचार पर विश्वास किया (लूका 7:50)। वह अपने पापों से अभिभूत हो चुकि थी और अब ये सभी पाप क्षमा हो चुके थे! यीशु समीह के संदेश पर विश्वास ने उसे पापों की पूर्ण क्षमा के बारे में जागरूकता प्रदान की और उसके पाप क्षमा हो चुके थे इस बात के प्रति अपनी कायलता को उसने उस प्रेम के द्वारा प्रगट किया जो उसने यीशु के प्रति दिखाया। जो वह महिला अपने हृदय में पहले से जानती थी और उसने अनुभव किया था उसकी पुष्टि यीशु ने यह कह कर की, ''तेरे पाप क्षमा हुए..... तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया, कुशल से चली जा'' (लूका 7:48-50)। रोमियों 5:1 कहता है, ''अतः जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।'' इस महिला को विश्वास था और इसलिए उसने परमेश्वर के साथ मेल किया और यीशु मसीह के प्रति अपना प्रेम दिखाया! इसके विपरीत यशायाह 57:20-21 कहता है, ''दुष्टों के लिए शांति नहीं है, मेरे परमेश्वर का यहि वचन है।''

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

सिखाएँ। यीशु किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

लूका 7:40-50 में दो देनदारों का दृष्टांत ''परमेश्वर के राज्य में व्यय प्रेम'' के बारे में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''क्षमा होने की अनुभूति होने का परिणाम प्रेम का प्रवाह है और क्षमा होने की चेतना का परिणाम सुसमाचार पर विश्वास करना है।'' वह व्यक्ति जिसके अधिक पाप क्षमा होते हैं, अधिक प्रेम दिखाता है और जिसके थोड़े पाप क्षमा होते हैं वह थोड़ा प्रेम दिखाता है।

यीशु के प्रति प्रेम का प्रवाह परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है! परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग, जिनके पाप क्षमा किए गए, चाहे वे कितने भी क्यों न रहे हों, परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता को यीशु मसीह के प्रति प्रेम के प्रवाह द्वारा व्यक्त करते हैं।

यीशु क्षमा के प्रति फरीसी की समझ की तुलना क्षमा के प्रति महिला की समझ से करते हैं। फरीसी ने सोचा कि वह धर्मी है और उसे क्षमा की कोई आवश्यकता नहीं। क्योंकि उसका कुछ भी क्षमा नहीं हुआ इसलिए उसने कुछ भी प्रेम नहीं किया। क्योंकि उसने यीशु मसीह से कोई क्षमा प्राप्त नहीं की इसलिए उसने यीशु मसीह से प्रेम भी नहीं किया।

इसके विपरीत, महिला अपने पापों के प्रति (पापमय स्वभाव) और उसी समय अपनी पूर्ण क्षमा के प्रति गहराई से सचेत थी। क्योंकि उसे यीशु से अधिक क्षमा प्राप्त हुई, उसने यीशु मसीह से अधिक प्रेम किया।

इस दृष्टांत में उस व्यक्ति जिसका थोड़ा क्षमा किया गया था और उस महिला जिसका अधिक क्षमा किया गया था के बीच तुलना की गई है! मसीहियों के बीच थोड़ा क्षमा किए जाने या बहुत क्षमा किए जाने के बीच कोई अंतर नहीं है। जब परमेश्वर किसी को पूर्णरूप से क्षमा करते हैं तो वे उस व्यक्ति को अपनी दृष्टि में 100 प्रतिशत धर्मी (क्षमा किया गया) घोषित करते हैं और उसके जीवन भर उसे 100 प्रतिशत धर्मी (क्षमा किया गया) मान कर उसके साथ व्यवहार करते हैं (रोमियों 4:4-8)! सभी मसीही जिन्होंने अपने पापों का पश्चयाताप किया और यीशु मसीह पर विश्वास किया, वे पूर्णरूप से क्षमा किए गए हैं (इब्रानियों 8:12)!

जैस-जैसे मसीही अपने आत्मिक जीवन में बढ़ते हैं, वे *अपने* पापमय स्वभाव के *प्रति जागरूकता,* जो कुछ यीशु मसीह ने उनके लिए किया और उन्होंने उन्हें कितना क्षमा किया इसके *प्रति अपनी जागरूकता में* भी बढ़ते हैं। परिणामस्वरूप मसीही यीशु मसीह के प्रति अपने प्रेम में भी बढ़ते हैं। एक पुराना मसीही एक नए मसीही की अपेक्षा अपने पापमय स्वभाव के प्रति अधिक जागरूक होता है। एक व्यक्ति जितना अधिक अपने पापी स्वभाव के बारे में जागरूक होता है, उतना ही अधिक उसे इस बात के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है कि उसके पाप पूर्णरूप से क्षमा कर दिए गए हैं। जितना अधिक वह अपने क्षमा किए जाने के प्रति जागरूक होता है, उताना ही अधिक वह यीशु मसीह के प्रति अपनी कृतज्ञता को यीशु मसीह के प्रति उमड़ते हुए प्रेम में व्यक्त करता है!

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

पढ़ें लूका 5:17-26

खोजें और चर्चा करें। ये लेखांश जो कुछ सिखाता है, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?

ध्यान दें। लूका 5:17-26 में, यीशु ने एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को चंगा किया जो उसके चार मित्रों द्वारा यीशु के पास लाया गया था। यीशु ने महसूस किया कि इस लकवेग्रस्त व्यक्ति की वास्तविक समस्या परमेश्वर की दृष्टि में उसके सभी अपराधों से ऊपर थी। यीशु उस लकवाग्रस्त व्यक्ति के हृदय में देख सकते थे और उन्होंने देखा की वह अपने पापों के प्रति जागरूक था और दोषी महसूस करता था और शर्मिंदा था। यीशु उसके चार मित्रों के हृदयों में भी देख सकते थे और देखा कि उन्हें उन पर और जो वह कर सकते हैं उस पर विश्वास है। जब यीशु ने लकवाग्रस्त व्यक्ति और उसके मित्रों के विश्वास को देखा तो वह प्रभावित हुए और कहा, "मित्र, तेरे पाप क्षमा हुए" (लूका 5:20)।

फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक क्रोधित थे, क्योंकि वह यीशु को परमेश्वर का निंदक मानते थे। उन्होंने यीशु पर वह काम करने का आरोप लगया जो केवल परमेश्वर कर सकते थे आर्थत पापों को क्षमा करना। अपने मन में वे यह सोच रहे थे कि लकवाग्रस्त व्यक्ति के लिए कुछ प्रायोगिक कार्य करने के बजाय, किसी के लिए यह कहना सरल है किः "तेरे पाप क्षमा हुए"। यीशु उनके विचारों

को जनते थे और अपने परमेश्वर[1] होने, जिसने मनुष्य का रूप लिया[2] और कि उन्हें पापों को क्षमा करने का अधिकार है, के दावे को लकवाग्रस्त व्यक्ति को तुरन्त और पूर्णरूप से चंगा करने के द्वारा सिद्ध किया! यीशु मसीह लोगों के पापों को प्रायश्चित बलिदान के आधार पर क्षमा करते हैं जो उन्होंने स्वयं क्रूस पर दिया। क्योंकि उन्होंने पापों के लिए प्रायश्चित किया, उन्हें मनुष्य के पापों को क्षमा करने का और पापों की क्षमा की घोषणा करने का अधिकार है!

जबकि फरीसी कई प्रतिबंधों के साथ, जैसे, ‘‘तुम्हें किसी को सब्त के दिन चंगा नहीं करना चाहिए’’, एक नकारात्म धर्म से भरे हुए थे, वहीं यीशु ने इस संसार में जरूरतमंद लोगों के प्रति प्रेम दिखाते हुए सकारात्मक कार्यो के साथ स्वयं को व्यस्त रखा।

---

[1] परमेश्वर का पुत्र

[2] मनुष्य का पुत्र